एकीकृत शिक्षा और समन्वित शिक्षा: एक तुलनात्मक अध्ययन

(शोध परिवेश में)

विनोद कुमार शर्मा
निदेशक, शारीरिक शिक्षा, प्रवक्ता, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजूकेशन,
पदेवा करौली (राज.)
विष्णु कुमार शर्मा
प्रवक्ता, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, पदेवा करौली (राज.)

सारांश- एकीकृत शिक्षा अथवा समन्वित शिक्षा का अर्थ शिक्षाशास्त्रियों व मनोवैज्ञानिकों में इस बात को लेकर मतभेद रहा है कि विशिष्ट बच्चों को शिक्षा विशिष्ट विद्यालयों में दी जाए या सामान्य विद्यालयों में सामान्य विद्यार्थियों के साथ दी जाए। असमर्थ बच्चों के लिए विशेष विद्यालयों की शुरुआत 18वीं शताब्दी में हुई थी, लेकिन मनोवैज्ञानिकों ने यह महसूस किया कि विशिष्ट बच्चों को सामान्य विद्यालयों में ही पढ़ाया जाना चाहिए ताकि उनमें हीन भावना न आए और वे समाज की मुख्य धारा से अलग न हों।

एकीकृत शिक्षा का प्रत्यय अभी नया है। अमेरिका में 1975 ई. में अमेरिकन कांग्रेस ने '**प्रत्येक अक्षम बच्चे की शिक्षा**' का एक कानून पास किया था। इस कानून का मुख्य उद्देश्य असमर्थ बच्चों को देश की मुख्य धारा से जोड़ना था।

भारत में भी एकीकृत शिक्षा अमेरिका के मुख्य धारा आन्दोलन' का ही परिणाम है। इस बात पर अधिक जोर दिया जा रहा है कि कम अपंग बालकों को विशेष शिक्षा की नहीं, अपितु एकीकृत शिक्षा की आवश्यकता है। इस बात की पूरी कोशिश की जा रही है कि 3 Rs (Reading] Writing] and Arithmetic) के साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष बालक सामान्य बालकों से पीछे न रहें।

बीसवीं शताब्दी के अन्त तक नए विचारों व नई तकनीकों ने विकलांग बच्चों की शिक्षा के नए रास्ते खोल दिए। यह महसूस किया गया कि कम व मध्यम श्रेणी के विकलांग बच्चों को अतिरिक्त सहायता का प्रबन्ध करके जैसे्र-विशेष कक्षाएँ, विशेष अध्यापक आदि की सहायता से सामान्य बच्चों के साथ शिक्षित किया जा सकता है। लागत व विषय-वृतान्त के संदर्भ में

भी यह कम खर्चीली है। समता व अवसरों की समानता के सिद्धान्तों के अनुसार ही विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा की धारणा ही उत्तम है।

समन्वित शिक्षा मुख्यतः अमेरिका की मुख्य धारा आन्दोलन' का ही परिणाम है। समन्वित शिक्षा शारीरिक व मानसिक रूप से बाधित बालकों को सामान्य बालकों के साथ सामान्य कक्षा में शिक्षा प्राप्त करवाकर व विशिष्ट सेवाएँ देकर विशिष्ट आवश्यकताओं को प्राप्त करने में सहायता करती है।

क्रुकशंक के अनुसार, "विशिष्ट बालकों की शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा का हिस्सा है। " अतः समन्वित शिक्षा वह शिक्षा है जिसके अन्तर्गत शारीरिक रूप से बाधित बालक तथा सामान्य बालक सामान्य कक्षा में साथ-साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं। समन्वित शिक्षा विशिष्ट शिक्षा का विकल्प न होकर विशिष्ट शिक्षा का पूरक है। यह शिक्षा अपंग बालकों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाती है तथा उनके नागरिक अधिकारों को यह शिक्षा सुनिश्चित करती है।

समन्वित शिक्षा शिक्षण की समानता व अवसर जो अपंगों को अब तक नहीं दिए गए, उनके मूल रूप से शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक आयाम है।

विभिन्न शिक्षाविदों द्वारा समन्वित शिक्षा को इस प्रकार वर्णित किया गया है-

1.सामान्य मानसिक विकास सम्भव है।

2.समन्वित शिक्षा कम खर्चीली है।

3.समन्वित शिक्षा के माध्यम से एकीकरण सम्भव है।

4.सामाजिक एकीकरण को सुनिश्चित करती है।

5.समानता के सिद्धान्त का अनुपालन करती है।

6.शैक्षिक एकीकरण सम्भव है।

एकीकृत/समन्वित शिक्षा की प्रकृति (Nature of Integrated Education)-

1.यह शिक्षा अपंग बच्चों को कम प्रतिबंधित व अधिक प्रभावी वातावरण उपलब्ध कराती है, जिससे वे सामान्य बालकों के समान जीवनयापन कर सकें।

2.समन्वित शिक्षा द्वारा जो सुविधाएँ सामान्य बालकों को प्रदान की जाती हैं वही सुविधाएँ असमर्थ बालकों को भी प्रदान की जाती हैं।

3.यह शिक्षा असमर्थ बालकों से उनके व्यक्तित्व की पहचान के आधार पर व्यवहार करती है, उनकी बाधिता के अनुसार नहीं।

4.समन्वित शिक्षा माता-पिता, अध्यापकों व शिक्षाविदों के सामूहिक प्रयास पर आधारित है।

5.समन्वित शिक्षा कम खर्चीली है तथा सामाजिक एकीकरण को सुनिश्चित करती है।

6.यह शिक्षा अपंग बालकों को समान शिक्षा के अवसर प्रदान करती है ताकि वे समाज के अन्य लोगों की भाँति आत्मनिर्भर होकर अपना जीवनयापन कर सकें।

7.यह शिक्षा विशिष्ट व सामान्य बच्चों के बीच के शारीरिक अन्तर को खत्म करती है।

8.यह शिक्षा अपंग व सामान्य बालकों के मध्य स्वस्थ सामाजिक वातावरण व सम्बन्ध बनाने में समाज के प्रत्येक स्तर पर सहायक है।

9.यह शिक्षा 'सबके लिए शिक्षा' के अधिकार का अनुपालन करती है। यह शिक्षा जाति, रंग व धर्म आदि के आधार पर भेदभाव नहीं करती है।

10.समन्वित शिक्षा द्वारा समर्थ व असमर्थ बच्चे एक-दूसरे के नजदीक आते हैं

जिससे विद्यालय का वातावरण अच्छा बनता है।

एकीकृत/समन्वित शिक्षा के उद्देश्य (Objectives of Integrated Education)-

1.एकीकृत शिक्षा विशिष्ट व सामान्य बच्चों हेतु एक-सी शिक्षा की व्यवस्था करती है।

2.एकीकृत शिक्षा के द्वारा विशिष्ट बालकों का मानसिक विकास बढ़ता है तथा इससे उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।

3.इस शिक्षा के द्वारा विशिष्ट बालक बिना किसी भेदभाव के एकीकृत शिक्षा को प्राप्त कर सकते हैं।

4.विशिष्ट बालकों में हीनभावना को खत्म करने में यह शिक्षा मदद करती है।

5.विशिष्ट बालकों को समाज में तथा प्राकृतिक वातावरण में सहजता से समायोजित करने में यह शिक्षा मदद करती है।

6.एकीकृत शिक्षा सामान्य व विशिष्ट बच्चों को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करती है।

समावेशी शिक्षा का अर्थकृसमावेशी शिक्षा का आशय सामान्य रूप से उस शिक्षा व्यवस्था से सम्बन्धित है, जिसमें सामान्य छात्र एवं अक्षम छात्र एक ही कक्षा-कक्ष में एक-दूसरे को सम्मिलित करके अध्ययन करते हैं। इस व्यवस्था में सभी प्रकार के अक्षम छात्र एक साथ मिलकर सामान्य छात्रों के साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं। इससे एक ओर अक्षम छात्रों को अपनी अक्षमता के प्रति हीनभावना का बोध नहीं होता क्योंकि वे सामान्य छात्रों के साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं वहीं दूसरी ओर सामान्य छात्रों को यह बोध होता है कि उनको अक्षम छात्रों की सहायता करनी चाहिए। इसके साथ-साथ इस शिक्षा व्यवस्था में अधिगमकर्त्ता, अभिभावक, समुदाय, शिक्षक एवं प्रशासकों को सम्मिलित किया जा सकता है। इस सम्मिलित शिक्षा का स्वरूप समन्वयन एवं सर्वाधिक व्यावहारिक प्रयोग पर आधारित है।

शिक्षा के क्षेत्र में अक्षम व्यक्तियों की शिक्षा व्यवस्था के लिए अधिनियम 1995 पारित किया गया तथा नेशनल ट्रस्ट अधिनियम 1999 पारित किया। इसी क्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अक्षम व्यक्तियों की शिक्षा के बारे में विचार किया गया। वर्तमान संविधान 93वें संशोधन में भी यह व्यवस्था की गई कि 6 से 14 वर्ष के सभी बालकों को शिक्षा प्राप्त करने का संवैधानिक अधिकार प्राप्त है। इसमें अक्षम बालकों को भी सम्मिलित किया गया। इसी क्रम में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना सन् 2000 में सम्मिलित शिक्षा वाले विद्यालयों की स्थापना करने का प्रस्ताव किया, जिसमें कि विशेष आवश्यकता वाले बालकों को शिक्षा प्रदान करने में सुविधा हो सके। इस प्रकार सन् 2000 में सम्मिलित विद्यालय के माध्यम से सम्मिलित शिक्षा की अवधारणा का उदय हुआ।

परिभाषाएँ (Definitions) -

डॉ. ए. बरौलिया के अनुसार, "समावेशी शिक्षा का आशय शिक्षा के सार्वजनीकरण हेतु अधिगमकर्त्ता, शिक्षक, अभिभावक, समुदाय, प्रशासन एवं शैक्षिक नीति निर्माताओं के संयुक्त प्रयासों से है जिनमें अक्षमता से युक्त सभी प्रकार के छात्रों की शिक्षा सुविधाओं पर विशेष केन्द्रीकरण किया जाता है।"

प्रो. एस. के. दुबे के अनुसार, "समावेशी शिक्षा का आशय उस शिक्षा व्यवस्था से है जिसमें सामान्य एवं अक्षम छात्रों के एक साथ शिक्षण प्रदान करते हुए उच्च अधिगम स्तर से सम्बन्धित क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है तथा समुदाय, अभिभावक, शिक्षक एवं प्रशासन का सक्रिय सहयोग प्राप्त किया जाता है।"

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि समावेशी शिक्षा का प्रमुख सम्बन्ध अक्षमता से युक्त छात्रों से है, जिनको विभिन्न प्रयासों के माध्यम से शिक्षा की मुख्य धारा में सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार समावेशी शिक्षा विभिन्न संसाधनों को समन्वित रूप में प्रस्तुतीकरण है जो कि अक्षमता से युक्त छात्रों के अधिगम स्तर पर सुधार करता है।

समावेशी शिक्षा की विशेषताएँ

1.समावेशी शिक्षा को एक उपागम के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिसके माध्यम से छात्रों की अधिगम सम्बन्धी आवश्यकताओं को जानकर उसे पूर्ण करने का प्रयास किया जाता है।

2.समावेशी शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत उन बालकों की शिक्षा को भी स्थान दिया जाता है जिन्हें समाज द्वारा बहिष्कृत तथा शिक्षा के अयोग्य समझा जाता है। इनको शैक्षिक विकास की धारा से सम्बद्ध किया जाता है।

3.समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत सामान्य एवं अक्षमता से युक्त छात्रों को सम्मिलित रूप से शिक्षा प्रदान की जाती है तथा यह ध्यान दिया जाता है कि दोनों को ही समान रूप से शिक्षा प्राप्त हो ।

4.समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत सामान्य छात्रों की अपेक्षा अक्षमता से युक्त छात्रों की शिक्षा व्यवस्था पर अधिक ध्यान दिया जाता है, जिससे कि अक्षमता से युक्त छात्रों द्वारा भी सामान्य छात्रों की भाँति शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भाग लिया जा सकें।

5.समावेशी शिक्षा व्यवस्था में समुदाय, प्रशासन, अभिभावक, शिक्षक एवं नीति निर्माणकर्त्ताओं का पूर्ण सहयोग प्राप्त किया जाता है, जिससे छात्रों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा प्राप्त हो सके।

6.इसमें अधिगमकर्त्ता की मनोदशा को ध्यान में रखते हुए नीतियों का निर्धारण किया जाता

है क्योंकि जब तक अधिगमकर्त्ता की रुचि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नहीं होगी तब तक उसके अधिगम स्तर को उच्च नहीं बनाया जा सकता।

7.समावेशी शिक्षा व्यवस्था में संयुक्त प्रयासों का प्रयोग किया जाता है अर्थात् इसमें सामाजिक एकता एवं सामाजिक कौशलों के विकास हेतु सामुदायिक सहयोग एवं अभिभावकों का सहयोग लिया जाता है।

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व

विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों एवं अधिगम अक्षमता से सम्बन्धित बालकों के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रकार के पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों का प्रावधान किया जाता है। इसके साथ-साथ छात्रों के लिए उन सुविधाओं का भी प्रावधान किया गया है जो कि उनके विकास में सहयोग प्रदान करती है। इसके पश्चात् भी समावेशी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता अनुभव की गई क्योंकि इसमें उन बिन्दुओं को समावेशित किया गया है जो कि शिक्षा व्यवस्था के साथ भावात्मक एकता का मार्ग प्रशस्त करते हैं। समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है-

1-सामाजिक आकांक्षाओं की पूर्ति-शिक्षा में सामुदायिक सहयोग प्राप्त करने के लिए समावेशी शिक्षा व्यवस्था एक महत्त्वपूर्ण साधन है क्योंकि इसमें उन सभी प्रक्रिया को सम्पन्न किया जाता है, जिससे अधिक से अधिक सामाजिक आकांक्षाओं की पूर्ति की जा सके तथा इससे समाज के सभी व्यक्ति शिक्षा व्यवस्था में सहयोग प्रदान कर सके। इसलिए सामुदायिक सहयोग के लिए सम्मिलित शिक्षा व्यवस्था आवश्यक है।

2-सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाना-छात्रों का अधिगम स्तर उच्च बनाने के लिए तथा सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए सम्मिलित शिक्षा की आवश्यकता अनुभव की जाती है क्योंकि इससे अधिगमकर्त्ता के अनुसार ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है।

3-बहुआयामी शिक्षण हेतु-शिक्षकों को बहुआयामी शिक्षण कला में निपुण बनाने के लिए भी समावेशी शिक्षा की आवश्यकता होती है क्योंकि इसमें शिक्षक द्वारा विभिन्न प्रकार की अक्षमताओं से युक्त बालकों को शिक्षा प्रदान करनी पड़ती है। इससे अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षक की शिक्षण कला में बहुआयामी सुधार सम्भव होता है।

4-सामाजिक कौशल का विकास-सामाजिक कौशलों के विकास में भी समावेशी शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि इसमें विभिन्न सामुदायिक कार्यक्रमों एवं विद्यालयी कार्यक्रमों में एक-दूसरे का सहयोग होता है, जिससे बालक सामाजिक कुशलताओं का ज्ञान प्राप्त करता है।

5-सामाजिकता का विकास-समावेशी शिक्षा के माध्यम से बालकों में सामाजिक गुण एवं सामाजिक समरसता का विकास सम्भव होता है क्योंकि इसमें सामान्य छात्रों द्वारा, अभिभावकों द्वारा, समुदाय द्वारा तथा शिक्षकों द्वारा अक्षम बालकों की सहायता की जाती है, जिससे सामाजिक एकता की स्थिति उत्पन्न होती है।

6-संसाधनों का समन्वय-समावेशी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता संसाधनों के समन्वयन एवं उनके सर्वोत्तम प्रयोग के लिए भी होती है। इस शिक्षा व्यवस्था में समुदाय, सरकार, शिक्षक एवं प्रशासन से सम्बन्धित क्रियाओं का समन्वयन करके विद्यालयी व्यवस्था को सामाजिक आकांक्षा के अनुरूप बनाया जाता है।

7-प्रतिभाओं का विकास-समावेशी शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से छात्रों में अक्षमता के साथ-साथ छिपी हुई अनेक प्रतिभाओं का विकास किया जाता है, क्योंकि अक्षम बालकों में अनेक असाधारण प्रतिभाएँ छिपी होती हैं जिन्हें समावेशी शिक्षा व्यवस्था द्वारा खोजा जाता है।

8-सर्वांगीण विकास हेतु-सर्वांगीण विकास की योजना में भी समावेशी शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है क्योंकि इसमें बालकों की समस्त शैक्षिक एवं अशैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रयास किया जाता है।

9-राष्ट्रीय विकास हेतु-राष्ट्रीय विकास में समावेशी शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है क्योंकि इसमें प्रारम्भ से 21 वर्ष तक के बालकों एवं युवाओं को शिक्षा की मुख्य धारा से सम्बद्ध किया जाता है तथा बालकों एवं युवाओं की अक्षमता को उनके सर्वांगीण विकास के मार्ग में बाधा बनकर उपस्थित नहीं होने दिया जाता।

समावेशी शिक्षा का दर्शन

समावेशी शिक्षा मानवतावादी दर्शन पर आधारित है। मानवतावाद शिक्षा को मानव का मूल अधिकार मानता है। मानवतावादी दार्शनिकों की दृष्टि से प्रत्येक राज्य को प्रत्येक बालक के

लिए, बिना किसी भेद-भाव के शिक्षा की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। भारतीय लोकतंत्र इसका सबसे बड़ा समर्थक है। समावेशी शिक्षा में बालकों के प्रति स्थान, जाति, धर्म, संस्कृति तथा लिंग आदि किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता है सबको शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार है। वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में मानवतावादी लहर है, सभी मानवाधिकारों के लिए सजग हैं यही समावेशी शिक्षा का उपयुक्त मूल दर्शन है।

समावेशी शिक्षा में दर्शन की आवश्यकता

समावेशी शिक्षा में भी दर्शन के अध्ययन की आवश्यकता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। चूँकि विशिष्ट बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए भी शिक्षा की आवश्यकता है। जीवन को विकसित बनाने के लिए शिक्षा का अंतिम ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। इसी के परिणामस्वरूप समावेशी शिक्षा के दर्शन की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। समावेशी शिक्षा में दर्शन उन आदर्शों एवं मूल्यों को प्रस्तुत करता है, जिसका अनुसरण करके बालक, समाज एवं राष्ट्र के जीवन को ऊँचा उठा सकते हैं।

समावेशी शिक्षा में दर्शन की आवश्यकता निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट है-

1.दर्शन समावेशी शिक्षा को आधार प्रदान करता है। दर्शन की सहायता के बिना शिक्षण प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकती है।

2.समावेशी शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत अपनाए जाने वाले सिद्धान्त, विधियाँ, विश्लेषण आदि सभी दर्शन के विषय हैं।

3.प्रत्येक समावेशी शिक्षक का अपना एक दार्शनिक दृष्टिकोण होता है। शिक्षक दृष्टिकोण का प्रभाव समावेशी बालकों के दृष्टिकोण पर भी पड़ता है। बालकों के प्रति शिक्षकों की भूमिका, उनके कर्तव्यों एवं कार्यों का विवरण तैयार करने में दर्शन की आवश्यकता पड़ती है।

4.समावेशी शिक्षा की समस्याओं का समाधान करने में दर्शन सहायता करता है। समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों का प्रतिपादन, शैक्षिक पाठ्यचर्या का समाज एवं राष्ट्र की दृष्टि से विकास करना तथा शिक्षण विधियों एवं उसकी उपादेयता की प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान करना, ये सब दर्शन के माध्यम से ही सम्भव है।

5.समावेशी शिक्षण प्रक्रिया को सार्थक बनाने के लिए शिक्षा दर्शन का ज्ञान आवश्यक है।

इसके लिए शिक्षा संस्थाओं का उचित प्रबन्धन एवं प्रशासन के स्वरूप को विकसित किया जा सकता है।

समावेशी शिक्षा में दर्शन की उपयोगिता एवं महत्त्व-

समावेशी शिक्षा में दर्शन की विशेष उपयोगिता एवं महत्त्व है क्योंकि समावेशी शिक्षा की विविध प्रकार की समस्याओं को दार्शनिक चिनतन के आधार पर सुलझाने का प्रयास करता है। अतः समावेशी शिक्षा में दर्शन की उपयोगिता एवं महत्त्व निम्नलिखित है-

1-समावेशी शिक्षा में दर्शन के माध्यम से शिक्षा की समस्याओं का दार्शनिक हल प्रस्तुत किया जाता है।

2-समावेशी शिक्षा में दर्शन के माध्यम से शिक्षा का स्वरूप एवं उसके उद्देश्यों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है।

3-दर्शन समावेशी शिक्षा के व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक पक्ष को प्रस्तुत करता है

4-समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्तों के लिए दर्शन की आवश्यकता होती है।

5-दर्शन ही शिक्षणशास्त्र का विकास करता है जिससे समावेशी शिक्षण की प्रक्रियाओं के सम्पादन हेतु विधियों, प्रविधियों एवं सूत्रों का विकास किया जाता है।

6-समावेशी शिक्षा में दर्शन के माध्यम से शिक्षक अपने कर्तव्यों को सुनिश्चित करने में सफल होता है।

7-समावेशी शिक्षण में शिक्षक को एक दार्शनिक बनकर शिक्षण में प्रतिबद्धता का भाव विकसित करना होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

- अग्रवाल डॉ संध्या, ''शिक्षा मनोविज्ञान'' प्रकाशन मंदिर, वाराणसी, संस्करण-2019।
- आगुनकोला, वी.जे. (2020) ''नाइजीरिया में सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति (माध्यमिक) हाई स्कूल विज्ञान शिक्षकों का प्रत्यक्षीकरण ज्ञात करने हेतु अध्ययन' अग्रवाल पब्लिकेशन।

- अस्थाना डॉ विपिन 2019-20 ''मनोविज्ञान ओर शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
- भटनागर डॉ ए.बी., मीनाक्षी, 'मनोविज्ञान शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, 2020।
- बुच एम.बी. ''थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'', बड़ौदा (इंडिया) सोसाइटी फार एजुकेशन रिसर्च एण्ड डवलपमेंट, 2019-20
- Buch, M.B. (ed.) : Second Survey in research of education (2020-2021)
- British Journal of Special Education 2020.
- Buch, M.B. (ed.): Fourth survey of research in education 2021-2022.

JPMRJ
JANMAT POWER
MONTHLY RESEARCH JOURNAL